विचार बिन्दु

संस्कृति का वज़ूद उसकी भाषा के बिना नहीं हो सकता। संस्कृति और भाषा का आपस में अटूट नाता होता है। इसलिए किसी भी संस्कृति के गौरव में उसकी भाषा का महत्व निहित होता है। –अज्ञात

मातृभाषा की संवैधानिक मान्यता बिना कैसा राजस्थान दिवस!

आती 30 मार्च को प्रतिवर्ष की भांति राजस्थान दिवस मनाया जायेगा। इस मौके राज्य सरकार ने पांच दिन चलने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम बनाये हैं। प्रदेश के शासन में बैठे सभी राजनेता इस प्रदेश की संस्कृति पर इतरायेंगे, भाषण देंगे, देशी-विदेशी पांवणों के सामने नाच-गाने करवाएंगे, मगर वे यहां के लोगों की मातृभाषा की संवैधानिक मान्यता के बारे में कुछ नहीं बोलेंगे। प्रतिस्पर्धी चुनावी राजनीति के फंदों में फंसे रहने वाले हमारे प्रतिनिधियों को खयाल ही नहीं है कि किसी भी संस्कृति का वज़ूद उसकी भाषा के बिना नहीं हो सकता। संस्कृति और भाषा का आपस में अटूट नाता होता है। इसलिए किसी भी संस्कृति के गौरव में उसकी भाषा का महत्व निहित होता है। भाषा सिर्फ़ संवाद का माध्यम ही नहीं होती, वह संस्कृति का प्रमाण भी होती है। किसी विद्वान ने कहा है कि–"यदि संस्कृति एक घर है, तो भाषा उसके सामने के दरवाजे की तथा अंदर के सभी कमरों की कुंजी है।" किसी भी समाज को अनिवार्यत: अपनी भाषा में रहना होता है, अन्यथा उसकी पहचान कुंठित हो जाती है और वह छिन्न-भिन्न हो जाता है। अपनी मातृभाषा को बचाए रखना किसी भी समाज के लिए उसके अस्तित्व का प्रश्न होता है। इसलिए राजस्थान दिवस के सांस्कृतिक आयोजनों के शासकीय आयोजक राजस्थानी भाषा की संवैधानिक मान्यता दिलाने के लिए कुछ ठोस करें इसकी अपेक्षा भले ही अन्य स्थानों से आकर इस प्रदेश में बस गये लोग न करें किन्तु यहां के मूल वाशिंदों की यह कामना तो होगी ही। 'एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिका' के अनुसार भाषा के माध्यम से मानव, एक सामाजिक समूह के सदस्य और उसकी संस्कृति में भागीदार के रूप में, स्वयं को अभिव्यक्त करता है। अपनी पुस्तक 'द राइज ऑफ इंग्लिश: ग्लोबल पॉलिटिक्स एंड द पावर ऑफ लैंग्वेज' में रोज़मेरी सलोमोने बताया है: "दुनिया की प्रमुख भाषा अंग्रेजी दुनिया भर में नए सांस्कृतिक और वर्गीय दाग पैदा करती है, और वैश्वीकरण की प्रकृति को ही प्रतिबिंबित करती है"। ऐसा ही भारत में हिन्दी के लिए कहा जा सकता है। कैसी विडंबना है कि राजस्थानी संस्कृति को तो स्वीकार किया जाता है मगर राजस्थानी भाषा को मान्यता देने में आनाकानी की जाती है। राजस्थानी संस्कृति के साथ उसकी भाषा अपरिहार्य हैं। यदि राजस्थानी भाषा को मान्यता के लिए राज में बैठे लोग कदम नहीं उठाते है तो यही माना जाएगा कि राजस्थानी संस्कृति का गुणगान वे सिर्फ दिखावे के लिए करते हैं। हमारा एक बड़ा भारतीय समाज है। लेकिन यह भी सच है कि वृहद भारतीय समाज के भीतर अनेक समाज हैं जिनकी अपनी पहचानें हैं जिनमें उनकी भाषाई पहचान भी एक है। राजस्थान के लोगों की अपनी मातृभाषा की मान्यता की जद्दोजहद इसी सांस्कृतिक पहचान बनाये रखने की है।

वर्ष 1949 की 30 मार्च को गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने रियासतों के विलय के बाद बने नये राज्य 'राजस्थान' का जयपुर में उद्घाटन किया था। तब इस राज्य की भाषा राजस्थानी थी। मगर यहां के तत्कालीन नेतृत्व नेदेश की एकता के हित में हिन्दी का साथ इस आशा के साथ दिया था कि सदियों से चली आ रही राजस्थानी भाषा भी आदर और अपना हक़ पाती रहेगी। भारत संघ के संवैधानिक इकाई बनने के बाद 1951 में हुई पहली जनगणना के अधिकृत आंकड़े राजस्थानी भाषा की कहानी खुद कहते हैं। उस जनगणना में भाषा के बारे में दो सवाल पूछे गये थे आपकी मातृभाषा कौनसी है और आप अपनी मातृभाषा के अलावा और कौन सी भारतीय भाषा जानते हैं। इस जनगणना में राजस्थान की 69. 84 प्रतिशत तथा अजमेर की 75.20 प्रतिशत आबादी की भाषा राजस्थानी पाई गई। हिन्दी को राजस्थान के केवल 21.98 प्रतिशत लोगों ने अपनी भाषा बताया जबकि अजमेर के मात्र 15.40 प्रतिशत लोगों ने हिन्दी को अपनी मातृभाषा बताया। जनगणना में भाषा और बोली के आंकड़ों का भी विश्लेषण किया गया। नये बने प्रदेश की भाषा को राजस्थानी बताते हुए उसकी 17 बोलियां बताई गई जबकि हिन्दी की पांच बोलियां बताई गई। यानि राजस्थानी हिन्दी से अधिक समृद्ध थी। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाएं शामिल की हुई है, लेकिन राजस्थानी भाषा के साथ दुभांत की गई है। के. डेविड हैरिसन ध्यान में लाये थे कि जब कोई भाषा मर जाती है तो क्या खो जाता है? किसी भाषा की संरचना और शब्दावली में किस प्रकार का ज्ञान अंतर्निहित होता है और उसका खोना मानवता के लिए कितना हानिकारक होता है! मातृभाषाएं ज्ञान की व्यापक और जटिल प्रणालियां होती हैं जो सहस्त्राब्दियों से विकसित हुई होती हैं। वे स्थानीय लोगों की पहचान, उनकी संस्कृतियों, विश्वदृष्टि और दृष्टिकोणों के संरक्षण और आत्मनिर्णय की अभिव्यक्ति के लिए प्रमुख होती हैं। जब मातृभाषाएं खतरे में आती हैं, तो देशी लोग भी खतरे में पड़ जाते हैं। भाषा किसी एक व्यक्ति या एक काल की रचना नहीं होती है, बल्कि यह एक संस्था होती है, जिस पर सैकड़ों पीढ़ियों और अनगिनत लोगों ने व्यक्तिगत तौर पर काम किया होता है। यह कहना कि राजस्थानी की इतनी बोलियां है इसलिए वह भाषा का दर्जा नहीं पा सकती इससे दुर्भाग्यपूर्ण बात कोई नहीं हो सकती। अंग्रेजी की कितनी बोलियां हैं? और अब भी विकसित हो रही हिन्दी की खुद की कितनी बोलियां हैं?

राजस्थानी को मान्यता न देना यहां के बच्चों के अधिकार का भी हनन भी है। संविधान का निर्देश है कि प्रत्येक बालक का अधिकार है कि वह अपनी मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा पाये। दुर्भाग्य से नयी शिक्षा नीति राजस्थानियों की भाषा हिन्दी मानते हुए राजस्थानी में प्रारम्भिक शिक्षा का निषेध करती है। राजस्थान के ग्रामीण इलाकों के बच्चे इसलिए पिछड़ रहे हैं क्योंकि उनकी प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में न होकर उनके लिए अजनबी हिन्दी में होती है। इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि राजस्थानी भाषा इस प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और इतिहास से जुड़ी हुई है। यह भाषा लोकगीतों, कविताओं, और परंपराओं में गहरे से समाहित है।

क्षेत्रीय या स्थानीय भाषा हमेशा उस क्षेत्रीय संस्कृति की विशेषताओं को दर्शाती है। इसलिए राजस्थानी भाषा को संवैधानिक मान्यता की मांग का मतलब चंद सरकारी नौकरियां पाना नहीं है, बल्कि राजस्थानी संस्कृति की प्रतिष्ठा की मांग है। भाषा सांस्कृतिक विरासत का एक संवेदनशील पहलू होती है। मातृभाषा का उपयोग सांस्कृतिक पहचान की सुरक्षा में मदद करता है और उनकी पारंपरिक विरासत को सुरक्षित रखता है। समझने की बात ये है कि राजस्थान के विभिन्न भूभागों की बोलियां, परंपराएं, मूल्य और आदर्श सब मिलकर इस प्रदेश के लोगों को उनकी परिभाषा देते हैं। ये परिभाषा इस रंगीले प्रदेश को आकार देती है जो विविधता और एकता का अत्यंत ही सुंदर उदाहरण है, उसी तरह जिस प्रकार हमारा देश भारत है। यह जान कर किसी को अचरज नहीं होना चाहिए कि राजस्थानी सांस्कृतिक समाज में पिछले सैकड़ों वर्षों से भारतीय संविधान के सभी मूल तत्व पाये जाते रहे हैं। राजस्थानी भाषा को मान्यता न देना यहां के रीति-रिवाजों, ज्ञान, विरासत और पूर्वजों की यादों को विस्मृत करना है। राजस्थानी को मान्यता न देना यहां के बच्चों के अधिकार का भी हनन भी है। संविधान का निर्देश है कि प्रत्येक बालक का अधिकार है कि वह अपनी मातृभाषा में प्रारम्भिक शिक्षा पाये। दुर्भाग्य से नयी शिक्षा नीति राजस्थानियों की भाषा हिन्दी मानते हुए राजस्थानी में प्रारम्भिक शिक्षा का निषेध करती है। राजस्थान के ग्रामीण इलाकों के बच्चे इसलिए पिछड़ रहे हैं क्योंकि उनकी प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में न होकर उनके लिए अजनबी हिन्दी में होती है। इससे कोई भी इनकार नहीं कर सकता कि राजस्थानी भाषा इस प्रदेश की समृद्ध संस्कृति और इतिहास से जुड़ी हुई है। यह भाषा लोकगीतों, कविताओं, और परंपराओं में गहरे से समाहित है। जो भी लोककला, नृत्य, संगीत या साहित्य है, उसका आधार राजस्थानी भाषा है। इस भाषा की हजार साल से अधिक की समृद्ध साहित्यिक परंपरा को दुनिया भर के भाषा विज्ञानी मान चुके हैं। इसका साहित्य भारतीय साहित्य जगत में एक अनमोल धरोहर मानी जाती हैं। राजस्थानी भाषा में रचा गया विशाल भक्ति काव्य इस प्रदेश की सीमाओं के पार दूर-दूर तक जाकर लोकप्रिय हुआ है। राजस्थानी भाषा इस प्रदेश की पहचान है। यहां के लोगों का अपनी स्थानीय संस्कृति और पहचान को मजबूत करना चाहना स्वाभाविक है। राजस्थानी भाषा के साहित्य ने राष्ट्रीय एकता के निर्माण जितना योगदान किया है उस पर राजस्थान के लोग स्वाभाविक ही गर्व कर सकते हैं। राजस्थान के वणिक देश के कोने-कोने में व्यापार करने गये और वहां के जीवन में घुल-मिल गये। व्यापारिक लेन-देन, बाजारों में इस भाषा ने अपनी भूमिका निबाही है, जिससे आर्थिक और सामाजिक संबंध ही मजबूत नहीं हुए हैं देश की एकता भी मजबूत हुई है। राजस्थानी भाषा का विरोध मुख्य रूप से कुछ राजनीतिक और सामाजिक कारणों से होता है। इसके विरोध करने वाले लोग इसे हिन्दी के विरुद्ध बताने की बेजा बात करते हैं। राजस्थानी को मान्यता की मांग हिन्दी का विरोध नहीं है। मगर हिन्दी के समर्थन के लबादे में छुप कर अनेक लोग राजस्थानी भाषा के विरोध में उतर कर विघटन की राजनीति करते हैं। वे यह कह कर अपने अज्ञान का ही परिचय देते हैं कि राजस्थानी हिन्दी का ही विकृत रूप है। राजस्थान में हिंदी प्रमुख रूप से उपयोग में ली जाती है, मगर उसका अंग्रेजी के सामने क्या हाल है वह किसी से छुपा नहीं है। राजस्थानी भाषा की मान्यता की मांग हिंदी को प्रतिस्थापित करने का प्रयास नहीं है। राजस्थानी को मान्यता मिलने से हिंदी या अंग्रेजी की महत्ता कम नहीं हो जाती। वर्तमान युग परिवर्तन का युग है। हमारे खान-पान का परिदृश्य कल जैसा नहीं है, और कल भी वैसा नहीं रहेगा जैसा आज है। इस बदलते परिदृश्य में व्यक्ति के व्यक्तित्व और अभिव्यक्ति की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। यहीं पर मातृभाषा की अहमियत सामने आती है। प्रदेश में राजस्थानी भाषा की अकादमी है, विश्वविद्यालय में यह भाषा पढ़ाई जाती है, आकाशवाणी और दूरदर्शन में रोज राजस्थानी के समाचार बुलेटिन प्रसारित होते हैं, राजस्थानी की पत्र-पत्रिकाएं निकलती हैं और केन्द्रीय साहित्य अकादमी इस भाषा को मानती है फिर भी दुर्भाग्य से यह भाषा संवैधानिक मान्यता से वंचित है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं, बल्कि एक नये जीवन का आरंभ है : बागड़े

- **राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय का 14वां दीक्षांत समारोह आयोजित**
- **दीक्षांत समारोह में विभिन्न पाठ्यक्रमों में 9521 उपाधियां प्रदान की गई**

कोटा, (निसं)। राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा द्वारा 14वां दीक्षांत समारोह मंगलवार को केडीए ऑडिटोरियम, कोटा में आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने की। सम्मानित अतिथि के रूप में गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो.रमा शंकर दुबे उपस्थित थे। इस अवसर पर राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने विद्यार्थियों को डिग्रियां और स्वर्ण पदक प्रदान किए एवं दीक्षांत समारोह के सफल आयोजन के लिए विश्वविद्यालय और सभी छात्र-छात्राओं को बधाई व उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रदान की। कुलसचिव भावना शर्मा ने 14वें दीक्षांत समारोह के समाप्ति पर विश्वविद्यालय की ओर से धन्यवाद ज्ञापन प्रदान किया।

राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय, कोटा के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े ने विभिन्न पाठ्यक्रमों में उपाधियां प्रदान की।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागडे ने दीक्षांत भाषण प्रदान करते हुए कहा कि दीक्षांत शिक्षा का अंत नहीं बल्कि आपके एक नये जीवन का आरंभ है। यह वह समय है जब आप अर्जित ज्ञान का उपयोग समाज व देश के प्रति समर्पित कर जनकल्याण हेतु करने के लिए तैयार हुए हैं। तकनीक शिक्षा की पहली आवश्यकता यह है कि हम जो भी बात कहें, तर्क से कहें। भारत विज्ञान और प्रौद्योगिकी में बहुत अग्रणी रहा है। तकनीकी शिक्षा केवल पुस्तकों तक सीमित नहीं है, यह नवाचार, अनुसंधान और व्यावहारिक ज्ञान का संगम है। नई शिक्षा नीति विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर आधारित है। उन्होंने विश्वविद्यालयों से आग्रह किया कि तकनीकी तथा विशिष्ट ज्ञान के क्षेत्रों के भी पाठ्यक्रम यहां अंग्रेजी के साथ हिन्दी में भी विकसित करें। स्थानीय ज्ञान-विज्ञान से संबंधित शोध एवं अनुसंधान को भी अधिकाधिक मातृभाषाओं में लाने के प्रयास शिक्षण संस्थान करें।

दिक्षांत समारोह में कुलपति प्रो.रमा शंकर दुबे ने अपने संबोधन में कहा कि राज्य में तकनीकी शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष 2006 में स्थापित राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय ने एक समृद्ध विरासत और गौरवशाली इतिहास बनाया है। इसके प्रत्यायन पाठ्यक्रम प्रदेश में तकनीकी शिक्षा की उच्च गुणवत्ता के प्रमाण हैं। उन्होंने युवाओं को देश और समाज के प्रति अपनी सामाजिक दाइत्वों के निर्वहन का सन्देश देते हुए कहा कि हमारे विद्यार्थी सामाजिक बदलाव के पथ प्रदर्शक हैं, हम सफलता के पाँच मार्गदर्शक सिद्धांत मंत्र नवोन्मेषी विचारों से भारत की आर्थिक वृद्धि को गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

कुलपति प्रो.एसके सिंह ने समारोह में राज्यपाल एवं कुलाधिपति हरिभाऊ बागड़े के आगमन एवं सानिध्य के लिए विश्वविद्यालय परिवार के ओर से हार्दिक आभार प्रकट किया। इस अवसर पर उन्होंने विश्वविद्यालय का प्रगति विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय सभी सम्बद्ध महाविद्यालयों का विकास एवं छात्रों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा को रोजगारपरक एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने हेतु लगातार प्रयास कर रहा है, जिससे राज्य के शिक्षक एवं छात्र तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में सम्पूर्ण भारत ही नहीं वरन् विश्वपटल पर अपनी पहचान कायम कर सकें। उन्होंने डिग्री तथा स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले सभी छात्र-छात्राओं को बधाई व शुभकामनाएं प्रदान की।

समारोह में विभिन्न पाठ्यक्रमों में 9521 उपाधियां प्रदान की गई। इनमें पीएचडी के 36, एमटेक के 212, एमआर्क के 1, एमबीए के 745, एमसीए के 595, बीटेक के 7817, बीआर्क के 113 और बीएचएमसीटी के 2 विद्यार्थी सम्मिलित हैं। इस वर्ष कुल 7487 छात्र और 2034 छात्राओं को उपाधियां प्रदान की गई। इस समारोह में कुलाधिपति स्वर्ण पदक कौटिल्य इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड इंजीनियरिंग, जयपुर के एमटेक (ट्रांसपोर्टेशन इंजीनियरिंग) पाठ्यक्रम के छात्र आदित्य शर्मा को प्रदान किया गया, जबकि कुलपति स्वर्ण पदक आर्या कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग एंड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी, जयपुर की बीटेक पाठ्यक्रम की छात्रा रश्मि कुमारी को प्रदान किया गया।

इसके अतिरिक्त, विभिन्न पाठ्यक्रमों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 20 विद्यार्थियों को स्वर्ण पदक प्रदान किए गए, जिनमें एमटेक के 4, एमबीए के 1, एमसीए के 1, बीटेक के 13 और बीआर्क के 1 विद्यार्थी शामिल हैं। इन 20 विद्यार्थियों में 11 छात्र एवं 9 छात्राएं सम्मलित हैं। समारोह के दौरान विभिन्न पाठ्यक्रमों में अभियांत्रिकी संकाय के 28, प्रबंधन संकाय में 03 एवं कम्प्यूटर एप्लीकेशन संकाय के पांच सहित 36 विद्यार्थियों को पीएचडी की डिग्रियां प्रदान की गई। जिसके अंतर्गत 24 छात्र एवं 12 छात्राएं सम्मिलित है।

कैलादेवी मेले से पहले श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ा, सेवा के लिए भंडारे शुरु

मेले में प्रदेश सहित उत्तर प्रदेश और हरियाणा के कई शहरों, गांवों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं

हिंडौन सिटी, (निसं)। आगरा-जयपुर नेशनल हाइवे संख्या-21 से जुड़े हिंडौन-बयाना-भरतपुर स्टेट हाइवे पर कैलादेवी मेले से पहले श्रद्धालुओं का सैलाब उमड़ पड़ा है। पदयात्रियों के जयकारों, डीजे पर बजते भजनों और लांगुरिया की धूम से माहौल भक्तिमय हो गया है। हिंडौन-सूरौठ और हिंडौन-करौली मार्ग पर पदयात्रियों की सेवा के लिए भंडारे और चिकित्सा कैंप सोमवार से शुरू हो गए। कई भंडारों में सुबह चाय-नाश्ते के बाद सुबह 10 से रात 12 बजे तक शुद्ध और ताजा भोजन की व्यवस्था है। कुछ कैंपों में चिकित्सा सेवाएं दी जा रही है। कहीं स्नान और विश्राम की सुविधा है।

करौली जिला मुख्यालय से 25 किलोमीटर दूर त्रिकूट पर्वत पर विराजित मां कैला-चामुंडा माता के दरबार में चैत्र माह में लगने वाले लक्खी मेले में उत्तर प्रदेश और हरियाणा के कई शहरों और गांवों से श्रद्धालु पहुंच रहे हैं। आगरा, एटा, फिरोजाबाद, मथुरा, कासगंज, रुपवास सहित कई इलाकों से पदयात्री हिंडौन होकर गुजरते हैं। इनका आगमन चैत्र माह की शीतला अष्टमी से शुरू होता है। छोटे बच्चों से लेकर युवा और बुजुर्ग तक सभी श्रद्धालु पदयात्रा में शामिल हैं।

- **पदयात्रियों के जयकारों, डीजे पर बजते भजनों और लांगुरिया गीतों से माहौल भक्तिमय बना**

दोपहर में तेज धूप और बढ़ ते तापमान के कारण पदयात्री भंडारों और पेड़ों की छांव में विश्राम कर रहे हैं। शाम होते ही जयकारों के साथ कैलादेवी की ओर बढ़ ते हैं। जगह-जगह लगे भंडारों में सुबह और शाम की आरती हो रही है। डीजे पर बजते लांगुरिया गीतों पर श्रद्धालु जमकर नृत्य कर रहे हैं। कई श्रद्धालु 100, 200 और 250 किलोमीटर दूर से पैदल आ रहे हैं।

भंडारों में सैकड़ों स्वयंसेवक सेवा में जुटे हैं। भोजन की व्यवस्था पंगत और बफर सिस्टम दोनों तरह से की गई है। मोहन नगर स्थित श्री श्याम मंदिर सेवा धाम की ओर से एसटीपी प्लांट के पास पहली बार कैंप लगाया गया है।

इसमें पदयात्रियों के विश्राम, चिकित्सा और स्नान की सुविधा के साथ खाटूश्याम और जगदंबे का भव्य दरबार सजाया गया है। बयाना रोड स्थित उमाशंकर सत्संग भवन में पंजाबी समाज की ओर से भंडारा चल रहा है। टीकाकुंड मंदिर में भी भंडारा है।

कोई शिशु को गोद में लिए, तो कोई छोटे रिक्शे में लिटाकर यात्रा कर रहा है। श्रद्धालुओं के जत्थे वाहन में कैलादेवी की प्रतिमा विराजित कर और अखंड ज्योत जलाकर यात्रा कर रहे हैं। भंडारों से भोजन और विश्राम के लिए आमंत्रण की आवाजें, भजनों की स्वर लहरियां और लांगुरिया के शोर से पूरा क्षेत्र कैला मैया की भक्ति में डूबा नजर आ रहा है।

आईजी एस परिमल ने पोकरण का दौरा किया

पोकरण, (नि.सं.)। आईजी एस परिमल ने पुलिस उपधीक्षक कार्यालय का मंगलवार को दौरा कर कार्यालय का निरीक्षण किया। इस दौरान शहर के गणमान्य नागरिकों एवं सीएलजी सदस्यों, महिला सखियों से वार्ता की।

इस अवसर पर पुलिस प्रशासन की सुरक्षा व्यवस्था, यातायात एवं महिला उत्पीड़न, सायबर क्राइम को लेकर महिला सखियों एवं सीएलजी सदस्यों से बढ़ रहे क्राइम को लेकर के दिशा निर्देश दिए। वहीं प्राइवेट बस यूनियन के अध्यक्ष खुमाण सिंह करनोत ने शहर की यातायात व्यवस्थाओं को लेकर पुलिस प्रशासन की व्यवस्थाओं पर संतोष जताया। व्यापार मंडल के अध्यक्ष राजेश व्यास ने शहर में रह रहे बाहरी व्यक्तियों के भौतिक सत्यापन को लेकर मांग रखी। अध्यक्ष व्यास ने बताया कि शहर में बाहरी लोग मजदूरी एवं छुटपुट व्यवसाय को अपना धंधा बनाकर कार्य करने के लिए आते हैं, वहीं शहर में चोरी एवं अन्य बड़ी वारदात करके निकल जाते हैं। बाहर से आए हुए लोगों का भौतिक सत्यापन पुलिस प्रशासन द्वारा समय रहते किया जाना उचित है, जिस पर आईजी परिमल ने डिप्टी भवानी सिंह को निर्देश देते हुए कहा कि एक माह में बाहरी लोगों का भौतिक सत्यापन कर रिपोर्ट भेजें। व्यापार मंडल के कोषाध्यक्ष व पूर्व पार्षद घुडाराम सोनी ने कहा कि पुलिस प्रशासन की कार्यशैली से व्यापार मंडल एवं शहरी लोग संतुष्ट है। उन्होंने मांग रखकर बताया कि पुलिस उपाधीक्षक की कार्यशैली वआमजन की मांग पुलिस उपधीक्षक भवानी सिंह का तबादला नहीं किया जाए, इनके कार्यकाल की पुलिस प्रशासन की टीम क्षेत्र का महाकुंभ बाबा रामदेवरा मेला एवं शहरी सुरक्षा के साथ अपराधियों में भय एवं आम जनता में विश्वास पुलिस प्रशासन का बना हुआ है। इस अवसर पर एडिशनल एसपी प्रवीण कुमार, क्षेत्र के विभिन्न स्थानों के थाना अधिकारी एवं लोग उपस्थित रहे।

पाकिस्तान की ड्रोन एक्टिविटी को नेस्तनाबूद करने की तैयारी

राजस्थान-पंजाब-जम्मू बॉर्डर पर 12 डी4 एंटी-ड्रोन सिस्टम तैनात होंगे

बीकानेर, (निसं)। बॉर्डर पर पाकिस्तान की ड्रोन एक्टिविटी को नेस्तनाबूद करने की तैयारी कर ली गई है। राजस्थान, जम्मू और पंजाब से सटी पाक सीमा पर 12 डी4 एंटी ड्रोन सिस्टम लगाए जाएंगे, जो हवा में तीन किमी रेडियस में 360 डिग्री कवरेज देंगे और दुश्मन के ड्रोन का पता लगाकर उसे मार गिराएंगे। सीमा पार से ड्रोन के जरिए होने वाली मादक पदार्थ और हथियारों की तस्करी को रोकने के लिए कई सालों से देश की सुरक्षा एजेंसियां काम कर रही हैं।

बीकानेर से सटी पाक सीमा की बात करें तो खाजूवाला से लेकर रावला, घड़साना, अनूपगढ़ और श्रीगंगानगर इलाके में आए दिन पाक से ड्रोन के जरिए हेरोइन और हथियार भेजे जा रहे हैं। खासकर पंजाब और कश्मीर के इलाके में पाक की नापाक हरकतें बढ़ रही हैं, लेकिन अब इसका कड़ा जवाब की तैयारी कर ली गई है। भारत ने स्वदेशी तकनीक के जरिये एक शक्तिशाली एंटी-ड्रोन सिस्टम तैयार किया गया है, इसे डी4 नाम दिया गया है।

राजस्थान, पंजाब और जम्मू बॉर्डर पर यह सिस्टम ऐसे स्थानों पर लगाया जाएगा, जहां पाक की ड्रोन एक्टिविटी सबसे ज्यादा है। बीएसएफ, राजस्थान फ्रंटियर के आईजी एमएल गर्ग ने बताया कि पाक से आने वाले ड्रोन्स को निष्क्रिय करने के लिए राजस्थान, पंजाब और जम्मू सीमा पर करीब 12 नए एंटी ड्रोन सिस्टम शीघ्र ही तैनात किए जाएंगे।

राशिफल बुधवार 26 मार्च, 2025

पंडित अनिल शर्मा

चैत्र मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2081, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 2:30 तक, सिद्ध योग दिन 12:25 तक, कौलव करण दिन 2:44 तक, चन्द्रमा आज दिन 3:15 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मकर, मंगल-मिथुन, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज राजयोग रात्रि 1:43 तक है। पंचक दिन 3:15 से आरम्भ होंगे।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:30 तक, शुभ 11:02 से 12:23 तक, चर 3:35 से 5:06 तक, लाभ 5:06 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:28, सूर्यास्त 6:37

मेष
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। दिन के मध्यान्ह व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। दिन के मध्यान्ह पश्चात अष्टम चन्द्र शुभ नहीं है।

सिंह
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव बना रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी।

वृश्चिक
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

मकर
व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। दिन के मध्यान्ह पश्चात घर-गृहस्थी के खर्चों में वृद्धि होगी।

कुंभ
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मीन
अपने आर्थिक मामलों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक प्रयासों में सफल रहेंगे। दिन के मध्यान्ह पश्चात अनावश्यक धन खर्च होगा।